शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

प्रेम और सौन्दर्य के अप्रतिम कवि शमशेर

डॉ.ललित कुमार सिंह

एसो० प्रो०, हिन्दी, पूर्व कुल सचिव कार्यवाहक, महात्मागाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म.प्र.)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

प्रेम और सौन्दर्य के अप्रतिम कवि शमशेर

- डॉ.ललित कुमार सिंह

प्रेम और सौन्दर्य मानव मन को सदा से छूता रहा है। आधुनिक हिन्दी कवियों में अग्रणी कवि शमशेर की रचना प्रवृत्तियों में प्रेम और सौन्दर्य के स्वरूप को तलाशने के प्रेरणा का प्रतिफलन है यह शोध आलेख।

विषय संकेत:- शमशेर बहादुर सिंह, हिन्दी कवि, हिन्दी लेखक, सौन्दर्य और प्रेम

कवि अपनी रचनाशीलता के दौरान जिन स्थितियों, परिस्थितियों, घटनाओं, व्यक्तियों से संवेदित होता है वही उसका भाव बोध होता है और यही भाव बोध उसकी रचनाओं में व्यक्त होता है। यह बात शमशेर के बारे में भी विचारणीय है। शमशेर स्वयं स्वीकार करते हैं कि ''मेरे चारों तरफ जो लीला हो रही है, मैं दूर-दूर तक देख रहा हूँ, देश में और विदेश में जो नया सृजन हो रहा है और कला सृजन वो कभी-न-कभी (शायद शीघ्र) किसी एक या दो चार कविताओं के रूप में जन्म ले लेगा अवश्य!..... एक अजीब तरह की लीला से मैं हर समय घिरा रहता हूँ, बहुत-से काव्य-कला-रूपों से। उनको शब्दों में प्रस्तुत करना लगभग असम्भव है, फिर भी रुपये में दो-तीन आने भर तो वो प्रकट होकर ही रहते हैं।"[1]

रचनाकार संवेदनशील होता है। वह जिस परिवेश में रहता है उसी के आस-पास उसकी रचनायें भी होती है। "मैं सदा ही अपने मानसिक परिवेश को चित्रित करता रहा हूँ। परिवेश के साथ-साथ उसके माहौल को भी 'अपने पास', 'इतने पास अपने' खींचता रहा हूँ कि मेरा अन्दरूनी व्यक्तित्व, अन्दरूनी कवि और चित्रकार अपने अक्स को उसमें उतरने से बाज नहीं रख सके।"[2] शमशेर की संवेदना का धरातल बहुत व्यापक है। वे प्रेम सौन्दर्य और प्रकृति से विशेष रूप से संवेदित होते हैं, इसलिए ये उनकी कविता में बहुतायत से आते हैं। उन्होंने इन विषयों पर परम्परा से अलग हटकर भावबोध ग्रहण किया है।

"शमशेर आधुनिक हिन्दी कविता में नारी सौन्दर्य और प्रेम के प्रथम कलाकार कवि हैं। प्रेम और सौन्दर्य को छायावादी आध्यात्मिकता और नई कवितावादी अमूर्तता से मुक्त करके पार्थिवता प्रदान करने वाला कवि। हिन्दी कविता को नारी सौन्दर्य की पार्थिवता से समृद्ध करने वाला कवि। ऐसा आधुनिक कवि जिसकी जोड़ में आप किसी भी दूसरे कवि को खड़ा न कर सकें।"[3] शमशेर का प्रेम संकीर्ण नहीं है वह विशाल है और विशालता भी इतनी व्यापक है जैसे आकाश-

"प्रेम का कमल कितना विशाल हो जाता है
आकाश जितना
और केवल उसी के दूसरे अर्थ सौन्दर्य हो जाते हैं
मनुष्य की आत्मा में।"[4]

मनुष्य की आत्मा में प्रेम का कमल जब आकाश जितना विशाल हो जाता है तो उसी के दूसरे अर्थ सौन्दर्य हो जाते हैं। अर्थात् शमशेर के लिए प्रेम और सौन्दर्य एक ही अनुभूति है।

"काश मैं न होऊँ
न होऊँ
तो कितना अधिक विस्तार
किसी पावन विशेष सौन्दर्य का
अवतरित हो!
पावन विशेष सौन्दर्य का।"[5]

शमशेर का सौन्दर्य पावन है और वे इसे विस्तार देते हैं। उनकी कविताओं से सौन्दर्य और नारी-देह के सौन्दर्य को अलगाना कठिन है कहीं कहीं तो दोनों एक साथ चलते हैं। ''उनकी यह सौन्दर्य चेतना किसी

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

प्रेम और सौन्दर्य के अप्रतिम कवि शमशेर

डॉ.ललित कुमार सिंह

एसो० प्रो०, हिन्दी, पूर्व कुल सचिव कार्यवाहक, महात्मागाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म.प्र.)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

अलौकिकता के प्रति आकर्षण का परिणाम नहीं, बल्कि लौकिक को ही अलौकिक सौन्दर्य से जोड़ने का सपना देखने वाले कवि की है।"[6] अपनी 'चीन' शीर्षक कविता में वे कहते हैं-

"और पहुँच कर वहीं
अपने प्रेम की
बाहों में बाहें डाल दी मैंने
और
उस सीमा के ऊपर खड़े हुए हम दोनों प्रसन्न थे
अमर सौन्दर्य का
कोई इशारा-सा"[7]

प्रेम और सौन्दर्य का यह भाव शमशेर की अधिकतर कविताओं में पाया जाता है। विजयदेव नारायण सही लिखते हैं कि ''.....तात्विक रूप से शमशेर की काव्यानुभूति सौन्दर्य की ही अनुभूति है। जिन लोगों का ख्याल है कि छायावाद के बाद हिन्दी कविता ने सौन्दर्य का दामन छोड़ दिया है, उन्होंने शायद शमशेर की कविताओं का आस्वादन करने का कष्ट कभी नहीं किया। मैं एक कदम और आगे बढ़कर कहना चाहूँगा कि आज तक हिन्दी में विशुद्ध सौन्दर्य का कवि यदि कोई हुआ है, तो वह शमशेर है और इस 'आज तक', में मैं हिन्दी के सब कवियों को शामिल करके कह रहा हूँ।.....सच तो यह है कि शमशेर की सारी कविताएँ यदि शीर्षकहीन छपें, या उनका सबका एक ही शीर्षक हो 'सौन्दर्य, शुद्ध सौन्दर्य' तो कोई अन्तर नहीं पड़ेगा।[8] 'सौन्दर्य' शीर्षक कविता में वे कहते हैं-

"उस आकाश में तुम्हारी गूँज
कि जैसे खून बजता हो हवा में
कि जैसे मुक्त जीवन का प्रवाह बजता हो:
सौन्दर्य जो त्वचा में नहीं
थिरकते रक्त में नहीं
मस्तिष्क में नहीं
नहीं :
कहीं इनके पार से
बरसता है अणु-अणु पल-पल में
बदन में दृष्टि में.....
शब्द में : और उसके पार से
कहीं शब्द के अर्थ में
दु:ख सा..... मौन.....सा
अपरमित मुख की चेतना में
मथता है
मथता है।"[9]

सौन्दर्य जीवन में मुक्त प्रवाह की तरह रहता है। त्वचा, रक्त और मस्तिष्क के पार से अणु-अणु, पल पल में बदन में दु:ख-सा, दृष्टि में मौन-सा और शब्द में अर्थ-सा बरसने वाला, यह सौन्दर्य कोई छायावाद की तरह आध्यात्मिक रहस्यवादी अनुभव नहीं है, बल्कि ठोस सांसारिक अनुभव है।

शमशेर ने प्रेम को रीतिकालीन एवं छायावादी दायरे से बाहर निकालकर सरल, सहज एवं आत्मीय तरीके से प्रस्तुत किया जो हृदय की अतल गहराई काो स्पर्श करता है-

"द्रव्य नहीं कुछ मेरे पास,
फिर भी मैं करता हूँ प्यार
रूप नहीं कुछ मेरे पास

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

प्रेम और सौन्दर्य के अप्रतिम कवि शमशेर

डॉ.ललित कुमार सिंह

एसो० प्रो०, हिन्दी, पूर्व कुल सचिव कार्यवाहक, महात्मागाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म.प्र.)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

फिर भी मैं करता हूँ प्यार
केवल भावुक दीन मलीन
फिर भी मैं करता हूँ प्यार।"[10]

प्रेम उनकी आत्मा के रग-रग में बसा है। प्रेम को छोड़ने के लिए वे हर तरह से प्रयत्न करते हैं किन्तु वह नहीं छूटता-

"मैंने कितने किये उपाय
किन्तु न मुझसे छूटा प्रेम
तरह-तरह के बदले वेश
किन्तु न मुझसे छूटा प्रेम।"

प्रभाकर श्रोत्रिय लिखते है "शमशेर का पूरा काव्य प्रेम के अन्त:स्फुरण से रोमांचित है, एक तरह से शमशेर की पूरी काव्य-यात्रा ही प्रेम के भीतर 'मे' की अमूर्त यात्रा है-बेठोस-सी-चाँदनी के अन्दर मैं की तरह संचारित।"शमशेर की कविताओं में प्रेम के सहज, आत्मीय एवं स्वत: स्फूर्त स्वभाव का चित्रण हुआ है। उनके प्रेम में कहीं नाटकीयता या दिखावा नहीं है। प्रेम तो उनकी स्वाँस में बसा है कवि सीधे कहते है-

"हाँ तुम मुझे प्रेम करो जैसे मछलियाँ लहरों से करती हैं
..... जिनमें वह फँसने नहीं आती,
जैसे हवाएँ मेरे सीने से करती हैं
जिनको वह गहराई तक दबा नहीं पाती
तुम मुझे प्रेम करो जैसे मैं तुमसे करता हूँ।"

शमशेर का प्रेम कभी न समाप्त होने वाला है, न वे चुकते हैं और न ही उनका प्रेम-

चुका भी हूँ मैं नहीं
कहाँ किया मैने प्रेम
अभी।
जब करूँगा प्रेम
पिघल उठेंगे
युगों के भूधार
ऊन उठेंगे सात सागर।
सरल से भी गूढ़, गूढ़तर
तत्व निकलेंगे
अमित विषमय
जब मथेगा प्रेम सागर
हृदय।"

प्रेम और सौन्दर्य से ही तो मानवता का विकास होता है। अपने इसी प्रेम और सौन्दर्य को बनाये रखने के लिए शमशेर काल से भी होड़ लेते हैं और मानवता को बचाये रखने के लिए उनकी कामना है कि वे अपराजित रहें-

काल,
तुझसे होड़ है मेरी : अपराजित तू-
तुझमें अपराजित मैं वास करूँ।

'कवियों के कवि' कहे जाने वाले शमशेर बहादुर सिंह प्रेम और सौन्दर्य के अप्रतिम कवि हैं। उनके लिए आलोचना के प्रचलित मानदण्ड अपर्याप्त और ओछे पड़ते हैं। हिन्दी साहित्य संसार में उनकी उपस्थिति ने रचनाशीलताा को नयी दिशा दी कविता को नये संस्पर्श और तेवर प्रदान किये। उनहोंने कविता की जमीन को

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

प्रेम और सौन्दर्य के अप्रतिम कवि शमशेर

डॉ.ललित कुमार सिंह

एसो० प्रो०, हिन्दी, पूर्व कुल सचिव कार्यवाहक, महात्मागाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म.प्र.)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

तोड़ा और नवीनता के साथ संवारा व गढ़ा भी। उन्होंने प्रेम और सौन्दर्य की नयी परिभाषा दी और हिन्दी कविता को नयी ऊँचाइयों पर पहुँचाया।

सदंर्भः-

1- शमशेर बहादुर सिंह, 'काल तुझे होड़ है मेरी' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1988 (भूमिका), पृ.9
2- वही, पृ.9
3- गोपेश्वर सिंह, संकलित कविताएँ (भूमिका), नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया, 2011, पृ.20
4- शमशेर बहादुर सिंह, 'इतने पास अपने', राज कमल प्रकाशन, दिल्ली, 1988, पृ.44
5- शमशेर बहादुर सिंह, 'चुका भी हूँ नहीं मैं"राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1981, पृ.99
6- गोपेश्वर सिंह, 'संकलित कविताएँ', (भूमिका), नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया, 2011, पृ.20
7- शमशेर बहादुर सिंह, 'कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1970, पृ. 71
8- सं.सर्वेश्वर एवं मलयज, 'शमशेर', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1981, पृ.25
9- शमशेर बहादुर सिंह, 'चुका भी हूँ नहीं मैं', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1981, पृ. 98
10- शमशेर बहादुर सिंह, 'काल तुझसे होड़ है मेरी', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1988, पृ. 97
11- वही, पृ.97
12- प्रभाकर श्रोत्रिय, का लेख 'शमशेर की कविता' 'आलोचना' जुलाई-सितम्बर 1977, पृ.52
13- शमशेर बहादुर सिंह, 'कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1970, पृ. 133
14- शमशेर बहादुर सिंह, 'चुका भी हूँ नहीं मैं', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1981, पृ. 111
15- शमशेर बहादुर सिंह, 'काल तुझसे होड़ है मेरी', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1988, पृ. 40

SHODH SANCHAYAN